

जैविक कृषि के सिद्धान्त प्रस्तावना

अन्तर्राष्ट्रीय जैविक कृषि आन्दोलन संघ, एडीलेड, आस्ट्रेलिया 2005 द्वारा अनुमोदित सिद्धान्त जैविक कृषि के मूल हैं। यहीं से जैविक कृषि का प्रादुर्भाव एवं विकास होता है।

कृषि मनुष्य की आवश्यक मूलभूत क्रियाओं में से एक है क्योंकि सभी मानवों को प्रतिदिन पोषण की आवश्यकता होती है। इतिहास, संस्कृति तथा सामाजिक मूल्य सभी कृषि में समाहित हैं। सिद्धान्त जो कृषि में व्यापक रूप में प्रयुक्त होते हैं वे व्यक्ति को मृदा, जल, पौधों तथा पशुओं को खाद्य तथा अन्य वस्तुओं के उत्पादन, तैयारी तथा वितरण के अर्न्तगत करने का मार्ग

प्रषस्त करते हैं। उनका उद्देश्य व्यक्ति को जीवन्त भूमि पर कार्य कर एक दूसरे से जोड़ने तथा आने वाली पीढ़ी को एक सुनहरा भविष्य सौंपने का है।

जैविक कृषि के सिद्धान्त जैविक क्रियाओं को पूर्ण विविधता के साथ प्रोत्साहित करने का है। ये अन्तर्राष्ट्रीय जैविक कृषि आन्दोलन संघ विकास की स्थितियों, योजनाओं तथा स्तरों या मानकों का मार्ग प्रषस्त करते हैं तथा जैविक कृषि को विश्व-व्यापी अपनाने की दृष्टि के साथ प्रस्तुत करते हैं।



जैविक कृषि आधारित है:—

स्वास्थ्य के सिद्धान्त

प्रकृति के सिद्धान्त

पारदर्षिता के सिद्धान्त

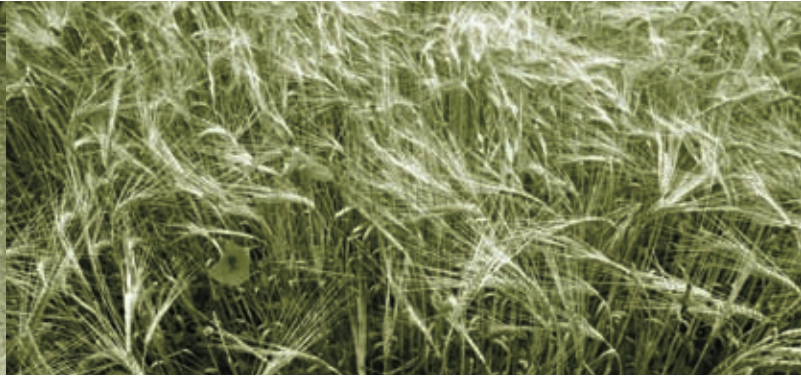
सुरक्षा के सिद्धान्त

प्रत्येक सिद्धान्त पूर्ण व्याख्या के साथ स्पष्ट रूप से व्यक्त होता है तथा सम्पूर्णता से प्रयुक्त किये गये हैं। वे क्रिया को प्रेरित करने के लिए नैतिक सिद्धान्तों की तरह रखे गये हैं।

स्वास्थ्य के सिद्धान्त प्रकृति के सिद्धान्त

जैविक कृषि मृदा, पौध, पशु, मनुष्य तथा अप्रत्यक्ष रूप से ग्रहों के स्वास्थ्य को जीवन्त तथा अक्षण बनाये रखने में सहायक है।

जैविक कृषि का मूल आधार पोषित वातावरण अक्षण बनाये रखने में सक्षम होता है। इसका मुख्य उद्देश्य भूमि, पादप, पशु तथा मानव, प्रकृति के साथ सामन्जस बनाये रखता है।



इसका मूल सिद्धान्त है कि व्यक्ति तथा समुदायों के स्वास्थ्य को पर्यावरण के स्वास्थ्य से अलग नहीं किया जा सकता है। उर्वर भूमि ही अच्छी उपज देने में सक्षम होती है जो मानव तथा पशु जगत को स्वस्थ बनाये रखने में सहायक होती है।

स्वास्थ्य जीवित रहने की प्रक्रिया की सम्पूर्णता है। यह केवल बीमारियों की अनुपस्थिति नहीं है बल्कि शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, पर्यावरणीय रख-रखाव है। प्रतिरक्षा, लचीलापन, नव-जीवन अच्छे स्वास्थ्य की विशेषताएँ हैं।

जैविक कृषि का योगदान, चाहे वह कृषि, प्रसंकरण, वितरण या उपभोग में हो, मृदा के सूक्ष्म जीव सामुच्च्य की जैविकता तथा प्रकृति के स्वास्थ्य को मनुष्य तक जीवित रखना है। इसका मुख्य सिद्धान्त भूमि में सूक्ष्म जीव सामुच्च्य की प्रचुरता, पोषित वातावरण तथा स्वास्थ्य मानव मानव में योगदान करने में सक्षम होता है। विशेष रूप से जैविक कृषि का लक्ष्य उच्च गुणवत्तायुक्त पोषण से भरपूर खाद्य उत्पादित करना है जो प्रतिरक्षात्मक स्वास्थ्य बनाये रखने में सहयोगी हो। इस दृष्टिकोण से यह रासायनिक खादों, कीटनाशकों, पशुओं की दवाओं के प्रयोग से बचता है जो स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डालते हैं।

जैविक कृषि का सिद्धान्त प्रतिपादित करता है कि मनुष्य प्रक्रिया और चक्र पर आधारित है वह उनके साथ कार्य करता है तथा उनको जीवित रखने में सहयोग देता है। है। पोषकता और स्वस्थ विषिष्ट उत्पादित पर्यावरण की प्रकृति के द्वारा प्राप्त किया जाता है। उदाहरण के लिए फसलों के लिए जीवित भूमि है पशुओं के लिए प्राकृतिक फॉर्म, मछली और समुद्री जीवों के लिए जलीय पर्यावरण आवश्यक हैं।

जैविक कृषि ग्रामीण, प्राचीन कृषि पद्धति, प्रकृति के चक्रीय और प्राकृतिक संतुलन के लिये उपयुक्त है। ये चक्र व्यापक हैं परन्तु उनका संचालन स्थान विषिष्ट होता है। जैविक कृषि स्थानीय प्रकृति, संस्कृति एवं पैमाने के अनुसार प्रबन्ध किया जाना चाहिए। प्राकृतिक संसाधनों के दोहन की रोकथाम एवं पर्यावरण संतुलन बनाये रखने हेतु उपलब्ध संसाधनों का प्रबन्धन एवं पुनःउपयोग स्थायित्व एवं जैव विविधता को संरक्षित रखने के लिए करना चाहिए। जैविक कृषि पद्धति के विकास, जीवों के स्थिरीकरण एवं कृषि विविधता को सुरक्षित रखते हुए जैविक कृषि द्वारा पर्यावरण संतुलन दिया जाना चाहिए। वे जो जैविक उत्पादन, संरक्षण एवं व्यवसाय करते हैं उनको पर्यावरण, जलवायु, जीवों, की विविधता, वायु एवं जल की सुरक्षा बनाये रखने में सहायक होना चाहिए।

पारदर्शिता का सिद्धान्त

जैविक कृषि का मूल आधार होना चाहिए कि सभी जीवन्त प्राणी को स्वस्थ वातावरण तथा अच्छे जीवन यापन का मौलिक अधिकार है।

सुरक्षा के सिद्धान्त

जैविक कृषि विषिष्ट रूप से उत्तरदायित्वों के साथ प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जिससे वर्तमान तथा भविष्य की पीढ़ी तथा सन्तुलित वातावरण अक्षुण्ण बनाये रखने में सहायक रह सकें।



मानव मात्र एक समान, आदर, न्याय तथा आगे बढ़ने तथा अन्य जीवों के सह अस्त्व के सम्बन्ध विकसित होने का है।।के स्थापन के समय सामान्य पर्यावरण एवं जीवन की सम्भा. वनाओं के सम्बन्धों को ध्यान में रखना चाहिए। पारदर्शिता का चरित्र विवरण न्याय एवं आदर के साथ विष्व के प्रबन्धकों एवं लोगों के बीच अन्य जीवों के सम्बन्धों के अनुसार होना चाहिए।

इन सिद्धान्तों के अनुसार जो जैविक कृषि से सम्बन्धित हैं उनको मानव सम्बन्धों को पारदर्शिता के साथ सभी स्तरों जैसे किसान, कार्यकर्ता, वितरक, व्यवसायी एवं उपयोग करने वालों को ध्यान में रखकर संचालन करना चाहिए। जैविक कृषि में लोगों को उच्च गुणवत्ता का जीवन, समान भोजन व्यवस्था एवं गरीबी उन्मूलन पर ध्यान देना चाहिए। इसका मुख्य उद्देश्य लोगों को उच्च गुणवत्ता के खाद्य एवं अन्य पदार्थों की पूर्ति करना है।

इस सिद्धान्त के अनुसार जानवरों को स्वस्थ जीवन हेतु अच्छे वातावरण तथा प्रबन्धन होना चाहिए जिससे उनका स्वास्थ्य एवं व्यवहार प्राकृतिक एवं अच्छा हो सके।

आज और कल की पीढ़ी एवं वातावरण के स्वास्थ्य की रक्षा सुदृढ़ रखने के लिए जैविक कृषि का प्रबन्धन सावधानी एवं जिम्मेदारी से करना आवश्यक है। जैविक कृषि एक जीवन्त एवं प्रगतिशील पद्धति है जो अन्तः एवं बाह्य आवश्यकताओं के प्रति पूर्ति में सहायक होती है। जैविक कृषि के कृषक भूमि की उर्वरता तथा उत्पादकता में वृद्धि कर सकते हैं परन्तु मानव स्वास्थ्य को खतरा किए बिना नई तकनीकियों के निर्धारण एवं अध्ययन करना आवश्यक है।

जैविक कृषि के प्रबन्धन, विकास एवं तकनीकियों के चुनाव में सावधानी एवं उत्तरदायित्वता के लिए ये सिद्धान्त व्याख्या करते हैं। लाभप्रद, सुरक्षित एवं स्वस्थ पर्यावरण हेतु विज्ञान जरूरी है। इसके लिये केवल वैज्ञानिक अनुभव ही जरूरी नहीं है बल्कि व्यावहारिक अनुभव, वर्षों से एकत्रित एवं प्रमाणित परम्परागत एवं स्वदेशी ज्ञान प्रबल निराकरण प्रस्तुत करते हैं। जैविक कृषि में उपयुक्त तकनीकियों को अपनाने से जोखिम को रोका जा सकता है एवं उन तकनी. कों जैसे जीन अभियन्त्रिकी को अस्वीकार किया जा सकता है। इसके निर्णय व्यक्ति के नैतिक मूल्यों एवं आवश्यकताओं के आधार पर पारदर्शिता एवं सहभागिता से पूरा किया जाना चाहिए। जीम अंसनमे दक दममके विससुव उपहीज इम िम्बिजमकए जीतवनही जतदेचंतमदज दक चंतजपबपचंजवतल चतवबमेमेण

This document is a translation of the English document entitled “Principles of Organic Agriculture”, the text of which was adopted by the IFOAM General assembly in Adelaide in 2005 and is the only official reference for the Principles. IFOAM does not endorse responsibility for the content of this translated version. For any doubt regarding the exact meaning of its content, please refer to the English version.



IFOAM'S MISSION IS LEADING,
UNITING AND ASSISTING THE
ORGANIC MOVEMENT IN ITS FULL
DIVERSITY.

OUR GOAL IS THE WORLDWIDE
ADOPTION OF ECOLOGICALLY,
SOCIALY AND ECONOMICALLY
SOUND SYSTEMS THAT ARE BASED
ON THE PRINCIPLES OF ORGANIC
AGRICULTURE.

IFOAM Head Office

Charles-de-Gaulle-Str. 5
53113 Bonn, Germany

Phone: +49 - 228 - 92650 - 10

Fax: +49 - 228 - 92650 - 99

Email: HeadOffice@ifoam.org

www.ifoam.org